Research Paper

Volume : 4 | Issue : 7 | July 2015 • ISSN No 2277 - 8179

d`f"k ,o vU; fØ;kvksa lEcU/kh vfUre fu.kZ;ksa esa xzkeh.k efgykvksa ,oa iq:"kksa dh Hkkxhnkjh dk rqyukRed fo'ys"k.k

Agriculture

KEYWORDS :

lquhrk cuhoky

iLrkouk

किसी भी समाज के विकास की स्थिति के निर्धारण के लिए महिलाओं की आर्थिक स्थिति एवं आत्मनिर्भरता को पैमाना बनाया जाना हमेषा से ही उचित माना जाता है। राश्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महिलाओं की अहम् भूमिका को दृश्टि में रखते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री if.Mr tokgj yky ug: th ने कहा कि ''यदि जनता में जागृति पैदा करनी है तो पहले महिलाओं में जागृति पैदा करो, एक बार जब वे आगे बढ़ती हैं तो परिवार आगे बढ़ता है, गाँव एवं षहर आगे बढ़ते हैं तथा सारा देष आगे बढ़ता है।''[1]कृशि एवं अन्य क्रियाओं की निर्णय–प्रक्रिया के रूप में भी महिलाओं के योगदान को देखा जाना चाहिए। महिलाओं के सषक्तिकरण के लिए निर्णय–प्रक्रिया में योगदान महत्वपूर्ण कारक है। कृशि व अन्य क्षेत्रों के निर्णयों में सामान्यतः पुरूशों की भूमिका निर्णायक और प्रमुख होती है। बहुधा कृशि प्रबन्ध व अन्य गतिविधियों में महिलाऐं एकल भागीदारी नहीं निभाती बल्कि वे निर्णयों के कुछ भाग का ही निर्धारण करती हैं परन्तु स्त्रियों के दृश्टिकोण और विचार बहुधा इन निर्णयों को काफी प्रभावित करते हैं।

II lkfgR; iqujkoyksdu

Pala (1978), केन्या में महिलाओं की कृशि कार्यों में भागीदारी, निर्णय–प्रक्रिया में भूमिका तथा उनकी भूमि तक पहुंच का विष्लेशण किया व पाया कि कृशि एवं पारिवारिक स्तर के निर्णय जैसे–भूमि की खरीद सम्बन्धी निर्णय पुरूश लेते हैं जबकि भूमि के उपयोग का निर्णय महिलाऐं करती हैं। बींलंकमअप ;1980द्धए कर्नाटक राज्य के धारवार जिले का अध्ययन किया एवं पाया कि कृशिगत महिलाऐं घरेलू क्षेत्र में धार्मिक कार्यों, स्वास्थ्य सम्बन्धी निर्णयों में अधिक भूमिका निभाती हैं। कृशि क्षेत्र में महिलाऐं खाद्यान्न के भण्डारण में अधिकतर निर्णायक भूमिका देती हैं। आयु एवं वैवाहिक स्थिति का कृशि निर्णयों में भागीदारी के साथ सम्बन्ध पाया जाता है। ।रपज ज्ञनउंत ैपदही ंदक च्तंजच ैपदही ठंतपं ;1993.94द्धए उत्तरप्रदेष के चामोली और अलमोड़ा जिलों के छः गांवों के सर्वे से स्पश्ट किया कि महिलाऐं कृशि कार्यों का 4/5 भाग सम्पन्न करती हैं। जबकि कृशि निर्णयों में 1/3 क्षेत्रों में ही इनका निर्णय स्वीकार किया जाता है। बीजों के चुनाव (29:), कृशि उपकरणों की खरीद (30:) एवं पषुओं की खरीद एवं बिक्री (34:) निर्णयों में महिलाओं का अधिक योगदान पाया गया। फिर भी भूमि की खरीद, कृशि वित्त, उत्पाद की बिक्री, उर्वरकों के प्रयोग निर्णयों में पुरूश सदस्यों का अधिक योगदान पाया गया।

Gupta and Sanadhya (1993), राजस्थान राज्य के कोटा जिले के गांवों के अध्ययन से स्पश्ट किया कि विभिन्न कृशि कार्यों की निर्णय–प्रक्रिया में महिलाओं का योगदान नगण्य है। वित्त सम्बन्धी, कृशि एवं पषुओं सम्बन्धी अधिकतर निर्णयों में पुरूशों की प्रबल भूमिका होती है। केवल कुछ क्षेत्रों जैसे–घर खरीदने, पषुओं की संख्या, पषुओं की बिक्री निर्णयों में 50: परिवारों में महिला एवं पुरूश दोनों सम्मिलित होते हैं। ैरवहलव मज ंस **(1980),** इंडोनेषिया में पारिवारिक मामलों से सम्बन्धित निर्णयों में सामान्यतः पुरूश, कृशि एवं आर्थिक मामलों से सम्बन्धित निर्णयों में महिलाऐं हस्तक्षेप करती हैं। भूमि की खरीद, नये मकान लेने, बच्चों की षिक्षा एवं विवाह से सम्बन्धित निर्णय महिला एवं पुरूश दोनों साथ–साथ लेते हैं लेकिन पुरूश का निर्णय अन्तिम होता है। ।दवदलउवने ;1991द्धए महिलाऐं घरेलू कार्यों में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। इंडोनेषिया के एकल परिवारों में निर्णय–प्रक्रिया में महिलाऐं महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। लेकिन घर के बाहर के कार्यों में सामान्यतः पुरूशों की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। वे परिवार को भोजन देने, पानी एवं ईंधन इकट्ठा करने, पारिवारिक आय (अपने खेत पर बिना वेतन काम करने), विपणन कार्यों के लिए जिम्मेदार होती हैं।

Kaur (1976), कृशि एवं गैर कृशि परिवारों में निर्णय–प्रक्रिया संरचना का लुधियाना जिले के दो गांवों के संदर्भ में अध्ययन किया कि पति घर के कार्यों से सम्बन्धित लगभग सभी निर्णयों में महिला के ससुर व घर को चलाने वालों के साथ प्रभुत्वकारी भूमिका निभाते हैं। सास एवं बेटे धार्मिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी गतिविधियों के निर्णय लेते हैं। क्नइमल मज ंस ;1982द्धए पषुपालन गतिविधियों के निर्णयों में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका का हरियाणा राज्य के करनाल जिले के कुछ गांवों में अध्ययन किया एवं पाया कि ग्रामीण महिलाऐं चार गतिविधियों दूध के उपयोग, दुधारू पषुओं की संख्या, दूध घर पर रखने एवं दूध बेचने की मात्रा, दुधारू पषुओं के लिए हरे चारे के प्रकार सम्बन्धी निर्णयों में बहुत ऊँची दर से भूमिका निभाती हैं। जबकि पषुओं के रहने के स्थान, दूध से प्राप्त आय के उपयोग, पषुओं के संचारी रोग एवं चेचक या षीतला माता सम्बन्धी रोग के निर्णयों में महिलाएं मुष्किल से ही कोई योगदान देती हैं। दूध बेचने, दूध के बेचने की दर, बछड़ा पैदा होने के समय पषुओं के लिए चारा, नये बछड़े की देखभाल, पषुओं की बिक्री, दुधारू पषुओं के भोजन की खरीद, पषुओं के पीने वाले पानी का साधन, बछड़ा पैदा होने से पूर्व दूध निकालना बन्द करना, बीमार पषुओं का इलाज आदि निर्णयों में महिलाऐं मध्यम भूमिका निभाती हैं।

III v/;;u i)fr

यह अध्ययन राजस्थान के टोंक जिले की निवाई तहसील के छः गांवों तक सीमित है। इसके लिए स्तरीकृत निदर्षन विधि ैजतंजपपिमक ैंउचसपदह डमजीवक) को अपनाया गया। वर्तमान अध्ययन प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। आंकड़ों के संकलन के लिए अनुसूची प्रविधि का प्रयोग किया है। प्राथमिक सामग्री का संकलन अनुसंधान क्षेत्र में जाकर चयनित उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क करके किया गया।

Iς ifj.kke ,oa fo'ys"k.k

अन्तिम निर्णयों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी का विष्लेशण कृशि कार्यों, घरेलू कार्यों एवं पषुपालन कार्यों सम्बन्धी निर्णयों के लिए पृथक–पृथक रूप से किया गया है। प्रत्येक प्रकार के अन्तिम निर्णयों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी का विष्लेशण कम विकसित गांवों, मध्यम विकसित गांवों तथा अधिक विकसित गांवों के लिए पृथक–पृथक रूप से किया गया है। साथ ही महिलाओं एवं पुरूशों की स्थिति में पाये जाने वाले अन्तर की प्रारम्भिक जानकारी के लिए पुरूशों के छोटे प्रतिरूप का चयन कर तथ्यों को संग्रहित एवं विष्लेशित किया गया है।

कृशि कार्यों सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूशों की भागीदारी का तुलनात्मक विष्लेशण अन्तिम निर्णयों की दृश्टि से तथ्यों को तीनों प्रकार के गांवों के सम्बन्ध में एक साथ प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1. कृशि कार्यों के अन्तिम निर्णयों में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूशों की भागीदारी

N=200, F=150, M=50

xfrfof/k;k¡	vfUre fu.kZ; esa Hkkxhnkjh					
	vfUre fu.kZ;ksa esa efgykvksa dh Hkkxhnkjh			vfUre fu.kZ;ksa esa iq:"kksa dh Hkkxhnkjh		
	L.D. (N=33)	**M.D. (N=53)**	**H.D. (N=64)**	**L.D. (N=11)**	**M.D. (N=18)**	**H.D. (N=21)**
1- cht cksus dk LFkku	**5 (15.15)**	**2 (3.77)**	**1 (1.56)**	**8 (72.73)**	**9 (50)**	**9 (42.86)**
2- cksus okyh Qlyksa dh fdLesa	**3 (9.09)**	**2 (3.77)**	**1 (1.56)**	**9 (81.82)**	**9 (50)**	**10 (47.62)**
3- moZjdksa dk iz;ksx	**3 (9.09)**	**2 (3.77)**	**1 (1.56)**	**10 (90.91)**	**10 (55.56)**	**11 (52.38)**
4- Hkwfe dh [kjhn ,oa fcØh	—	**2 (3.77)**	**1 (1.56)**	**9 (81.82)**	**7 (38.89)**	**8 (38.10)**
5- d`f"k ;U=ksa dh [kjhn ,oa fcØh	**1 (3.03)**	**1 (1.89)**	**1 (1.56)**	**7 (63.64)**	**6 (33.33)**	**8 (38.10)**
6- d`f"k mRikn dk Hk.Mkj.k	**2 (6.06)**	**1 (1.89)**	**2 (3.13)**	**6 (54.55)**	**6 (33.33)**	**7 (33.33)**
7- foi.ku	—	**1 (1.89)**	**1 (1.56)**	**9 (81.82)**	**9 (50)**	**9 (42.86)**

नोटः– कोश्ठक में दिये गये आँकड़े प्रतिषत को व्यक्त कर रहे हैं।

L.D.= विकसित गाँव डण्क्ण्त्र मध्यम विकसित गाँव

H.D. त्र अधिक विकसित गाँव

कृशि निर्णयों में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूशों की भागीदारी सम्बन्धी आंकड़ों के विष्लेशण से स्पश्ट है कि कम विकसित गांवों में अन्तिम निर्णयों में महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी, बीज बोने के स्थान सम्बन्धी क्रियाओं (15.5%) में पाई गई। जबकि भूमि की खरीद एवं बिक्री तथा विपणन जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों में एक भी महिला अन्तिम निर्णयों में भागीदारी नहीं निभाती। जबकि पुरूशों की सर्वाधिक भागीदारी उर्वरकों के प्रयोग निर्णयों में पाई गई। मध्यम विकसित गांवों में अन्तिम निर्णयों में महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी बीज बोने के स्थान, बोने वाली फसलों की किस्मों, उर्वरकों के प्रयोग तथा भूमि की खरीद एवं बिक्री क्रियाओं (3.77ः) में रही। जबकि षेश क्रियाओं में 1.89ः महिलाऐं अन्तिम निर्णय लेने में समर्थ पाई गई। इसी गांव में पुरूशों की सर्वाधिक भागीदारी उर्वरकों के प्रयोग निर्णयों (55.56ः) में पाई गई। अधिक विकसित गांवों में कृशि उत्पाद के भण्डारण सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों की दृश्टि से 3.13ः महिलाओं की भागीदारी पायी गई। षेश अन्य क्रियाओं में 1.56ः महिलाओं की भागीदारी अन्तिम निर्णय लेने तक सीमित है। पुरूशों की सर्वाधिक भागीदारी उर्वरकों के प्रयोग निर्णयों में पाई गई। जबकि सबसे कम भागीदारी कृशि उत्पाद के भण्डारण निर्णयों (33.33%) में रही।

तुलनात्मक रूप से विभिन्न गांवों के अन्तर्गत ज्ञात होता है कि कम विकसित गांवों में कृशि कार्यों सम्बन्धी अधिकतर गतिविधियों के अन्तिम निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी, मध्यम एवं अधिक विकसित गांवों की महिलाओं की भागीदारी की तुलना में अधिक पाई गई। केवल भूमि की खरीद एवं बिक्री तथा विपणन सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में मध्यम विकसित गांवों में महिलाओं की भागीदारी का सर्वाधिक प्रतिषत (क्रमषः 3-77%, 1.89%) पाया गया। जबकि पुरूशों के सम्बन्ध में कृशि निर्णयों की समस्त क्रियाओं सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में कम विकसित गांवों के पुरूशों का प्रभुत्व पाया गया।

कृशि कार्यों के सम्बन्ध में स्ण्क्ण्ए डण्क्ण् एवं भ्ण्क्ण् तीनों ही प्रकार के गांवों में अन्तिम निर्णयों से सम्बन्धित सभी गतिविधियों में पुरूशों की भागीदारी, महिलाओं की अपेक्षा अधिक पाई गई। अर्थात् किसी भी कार्य के अन्तिम निर्णय में पुरूशों की प्रभुत्वकारी भूमिका पाई गई।

?kjsyw dk;kZ lEcU/kh vfUre fu.kZ;ksa esa xzkeh.k efgykvksa ,oa iq:"kksa dh Hkkxhnkjh dk rqyukRed fo'ys"k.k

ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूशों द्वारा घरेलू कार्यों सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में भागीदारी सम्बन्धी आंकड़ों का विष्लेशण तालिका–2 में किया गया है।

तालिका – 2ः घरेलू कार्यों के अन्तिम निर्णयों में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूशों की भागीदारी

N = 200, F=150, M=50

xfrfof/k;k¡	vfUre fu.kZ;ksa esa Hkkxhnkjh					
	vfUre fu.kZ;ksa esa efgykvksa dh Hkkxhnkjh			vfUre fu.kZ;ksa esa iq:"kksa dh Hkkxhnkjh		
	L.D. (N=33)	**M.D. (N=53)**	**H.D. (N=64)**	**L.D. (N=11)**	**M.D. (N=18)**	**H.D. (N=21)**
1. बच्चों की षिक्षा एवं प्रवेष	**2 (7.14)**	**1 (2.17)**	**1 (1.72)**	**6 (60)**	**6 (50)**	**4 (21.05)**
2. आय व खर्चे सम्बन्धी	**2 (6.06)**	**1 (1.89)**	**2 (3.13)**	**3 (27.27)**	**2 (11.11)**	**2 (9.52)**
3. परिवार नियोजन सम्बन्धी	—	—	—	**6 (60)**	**7 (58.33)**	**7 (38.89)**
4. बच्चों एंव अन्य सदस्यों की देखभाल सम्बन्धी	**2 (6.06)**	**1 (2)**	**3 (4.69)**	**1 (9.09)**	—	**1 (4.76)**
5. घर प्रबन्धन सम्बन्धी	**2 (6.06)**	**1 (1.89)**	**2 (3.13)**	**3 (27.27)**	**1 (5.56)**	—
6. उधार लेन–देन	**2 (6.06)**	**1 (1.89)**	**2 (3.13)**	**8 (72.73)**	**8 (44.44)**	**12 (57.14)**
7. बच्चों के विवाह सम्बन्धी	**1 (4.35)**	**1 (2.63)**	**1 (1.85)**	**5 (62.5)**	**3 (30)**	**7 (41.18)**

नोटः– कोश्ठक में दिये गये आंकड़े प्रतिषत को व्यक्त कर रहे हैं।

L.D.= कम विकसित गांव M.D.= मध्यम विकसित गांव

H.D. = अधिक विकसित गांव

कम विकसित गांवों में अन्तिम निर्णयों में महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी बच्चों की षिक्षा एवं प्रवेष निर्णयों (7.14ः) में पाई गई। जबकि परिवार नियोजन जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों में एक भी महिला अन्तिम निर्णय लेने में समर्थ नहीं पाई गई। पुरूशों की स्थिति में कम विकसित गांवों में उधार लेन–देन निर्णयों (72.73%) में पुरूशों की सर्वाधिक भागीदारी तथा बच्चों एवं अन्य सदस्यों की देखभाल निर्णयों में (9.09ः) न्यूनतम भागीदारी रही। मध्यम विकसित गांवों में घरेलू कार्यों सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी बच्चों के विवाह सम्बन्धी निर्णयों (2.63%) में पाई गई। जबकि परिवार नियोजन निर्णयों में एक भी महिला समर्थ नहीं पाई गई। पुरूशों के सम्बन्ध में बिल्कुल विपरीत स्थिति पाई गई। पुरूशों की सर्वाधिक भागीदारी परिवार नियोजन निर्णयों (58.33ः) में पाई गई। बच्चों एवं अन्य सदस्यों की देखभाल सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में एक भी पुरूश समर्थ नहीं पाया गया। अधिक विकसित गांवों में बच्चों एवं अन्य सदस्यों की देखभाल सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों (4.69%) में महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी पाई गई। जबकि परिवार नियोजन निर्णयों में एक भी महिला भूमिका नहीं निभाती। पुरूशों की सर्वाधिक भूमिका उधार लेन–देन निर्णयों (57.14%) में रही। जबकि घर प्रबन्धन निर्णयों में एक भी पुरूश की भूमिका नहीं पाई गई।

विभिन्न प्रकार के गांवों के अन्तर्गत घरेलू कार्यों सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में महिलाओं एवं पुरूशों की भागीदारी को तुलनात्मक रूप से देखें तो de fodflr xkoksa esa ?kjsyw dk;ksZa lEcU/kh lHkh xfrfof/k;ksa ds vfUre fu.kZ;ksa esa efgykvksa dh Hkkxhnkjh] e/;e fodflr ,oa vf/kd fodflr xkoksa dh efgykvksa dh Hkkxhnkjh dh rqyuk esa vf/kd ikbZ xbZA iq:"kksa ds lEcU/k esa Hkh vfUre fu.kZ;ksa ls lEcfU/kr lHkh fØ;kvksa esa de fodflr xkoksa ds iq:"kksa dk iHkqRo ik;k x;kA

?kjsyw dk;ksZa ds lEcU/k esa Hkh L.D., M.D. ,oa H.D. rhuksa gh rjg ds xkoksa esa vfUre fu.kZ;ksa ls lEcfU/kr lHkh dk;ksZa esa iq:"kksa dh Hkkxhnkjh] efgykvksa dh rqyuk esa vf/kd ikbZ xbZA vFkkZr~ fdlh Hkh ?kjsyw fØ;k ds vfUre fu.kZ; esa fu.kkZ;d o izeq[k Hkwfedk iq:"k oxZ gh fuHkkrk gSA

i'kqikyu dk;ksZa lEcU/kh vfUre fu.kZ;ksa esa xzkeh.k efgykvksa ,oa iq:"kksa dh Hkkxhnkjh dk rqyukRed fo'ys"k.k

अन्तिम निर्णयों में विभिन्न गांवों में भागीदारी का तुलनात्मक विष्लेशण तालिका – 3 में प्रस्तुत किया गया है।

rkfydk & 3% i'kqikyu dk;ksZa lEcU/kh vfUre fu.kZ;ksa esa xzkeh.k efgykvksa ,oa iq:"kksa dh Hkkxhnkjh

N = 200, F=150, M=50

xfrfof/k;k¡	vfUre fu.kZ;ksa esa Hkkxhnkjh					
	vfUre fu.kZ;ksa esa efgykvksa dh Hkkxhnkjh			vfUre fu.kZ;ksa esa iq:"kksa dh Hkkxhnkjh		
	L.D. (N=33)	**M.D. (N=53)**	**H.D. (N=64)**	**L.D. (N=11)**	**M.D. (N=18)**	**H.D. (N=21)**
1. पषुओं के चराने से सम्बन्धित	**14 (42.42)**	**13 (24.53)**	**11 (17.19)**	**2 (18.18)**	**3 (16.67)**	**4 (19.05)**
2. पषुओं की खरीद एवं बिक्री	**3 (9.09)**	**3 (5.66)**	**1 (1.56)**	**6 (54.55)**	**6 (33.33)**	**10 (47.62)**
3. पषुओं का बीमा	—	—	—	—	**1 (50)**	**1 (33.33)**
4. दूध व दूध सम्बन्धी पदार्थों की बिक्री	**18 (54.55)**	**15 (28.85)**	**4 (7.69)**	**3 (27.27)**	**1 (6.25)**	**3 (20)**
5. पषुओं की संख्या	**4 (12.12)**	**4 (7.55)**	**1 (1.56)**	**6 (54.55)**	**7 (38.89)**	**3 (47.62)**
6. पषुओं का इलाज	**3 (9.09)**	**2 (3.77)**	**1 (1.56)**	**4 (36.36)**	**6 (33.33)**	**11 (52.38)**

नोटः– कोश्ठक मे दिये गये आँकड़े प्रतिषत को व्यक्त कर रहे हैं।

L.D. = कम विकसित गाँव M.D. = मध्यम विकसित गाँव

H.D. = अधिक विकसित गाँव

कम विकसित गाँवों में अन्तिम निर्णयों में महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी दूध व दूध सम्बन्धी पदार्थों के बिक्री निर्णयों (54.55%) में रही। महिलाओं की न्यूनतम भागीदारी पषुओं की खरीद एवं बिक्री तथा पषुओं के इलाज निर्णयों में रही। जहां यह प्रतिषत 9.09 पाया गया। पुरूशों की सर्वाधिक भूमिका पषुओं की खरीद एवं बिक्री तथा पषुओं की संख्या सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों (54.55ः) में पाई गई। जबकि न्यूनतम भागीदारी पषुओं के चारे से सम्बन्धित निर्णयों (18.18ः) तक सीमित है। मध्यम विकसित गांवों में भी अन्तिम निर्णयों में महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी दूध व दूध सम्बन्धी पदार्थों की बिक्री निर्णयों (28.85ः) में पाई गई। पषुओं के

Volume : 4 | Issue : 7 | July 2015 • ISSN No 2277 - 8179

इलाज निर्णयों में 3.77ः महिलाओं की न्यूनतम भागीदारी रही। पुरूशों की स्थिति में मध्यम विकसित गांवों में न्यूनतम भागीदारी दूध व दूध सम्बन्धी पदार्थों की बिक्री निर्णयों (6.25ः) में पाई गई। अधिक विकसित गांवों में में महिलाओं का अन्तिम निर्णयों में सर्वाधिक योगदान पषुओं के चारे सम्बन्धी निर्णयों (17.19%) में रहा। जबकि न्यूनतम भागीदारी पषुओं की खरीद एवं बिक्री, पषुओं की संख्या एवं पषुओं के इलाज निर्णयों में रही। जहाँ यह प्रतिषत केवल 1.56 ही पाया गया। अधिक विकसित गांवों की सर्वाधिक भागीदारी पषुओं के इलाज निर्णयों (52.38%) तथा न्यूनतम पषुओं के चारे से सम्बन्धित निर्णयों (19.05%) में पाई गई।

विभिन्न प्रकार के गाँवों के तुलनात्मक विष्लेशण से स्पश्ट है कि कम विकसित गाँवों में पषुपालन सम्बन्धी समस्त गतिविधियों के अन्तिम निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी, मध्यम विकसित एवं अधिक विकसित गाँवों की महिलाओं की भागीदारी की तुलना में अधिक पाई। पुरूशों के सम्बन्ध में पषुओं की खरीद एवं बिक्री (54.55%), दूध व दूध सम्बन्धी पदार्थों की बिक्री (27.27%) एवं पषुओं की संख्या निर्णयों (54.55%) में कम विकसित गाँवों के पुरूशों का प्रभुत्व रहा। जबकि पषुओं के चारे से सम्बन्धित (19.05%) तथा पषुओं के इलाज निर्णयों (52.38%) में अधिक विकसित गाँवों के पुरूशों की भागीदारी, कम विकसित एवं मध्यम विकसित गाँवों के पुरूशों की भागीदारी की तुलना में अधिक पाई गई।

fofHkUu xkoka esa efgykvksa ,oa iq#"kksa dh fLFkfr dk rqyukRed :i ls n[kk rk de fodflr xkoka ,oa e/;e fodflr xkoka esa doy i'kqvksa ds pjkus ls lEcfU/kr rFkk n/k o n/k lEcU/kh inkFkksa dh fcØh lEcU/kh vfUre fu.kZ;ksa dks NksMdj 'k"k vU; fØ;kvksa esa efgykvksa dh vis{kk vfUre fu.kZ;ksa ij iq#"kksa dh vf/kd ifr'kr l[;k dh Hkkxhnkjh ikIr gbZA tcfd vf/kd fodflr xkoka esa i'kqikyu dk;ksa lEcU/kh lHkh xfrfof/k;ksa ds vfUre fu.kZ;ksa esa efgykvksa dh vis{kk iq#"kksa dh iHkkoRodkjh Hkwfedk ikbZ xbZA

fu"d"kZ

कृशि एवं अन्य क्रियाओं सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में विभिन्न गाँवों के तुलनात्मक विष्लेशण से स्पश्ट है कि कम विकसित गाँवों में कृशि कार्यों सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों से सम्बन्धित अधिकतर गतिविधियों एवं घरेलू एवं पषुपालन कार्यों की सभी गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी, मध्यम विकसित एवं अधिक विकसित गांवों की महिलाओं की भागीदारी की तुलना में अधिक पाई गई। जबकि पुरूशों के सम्बन्ध में कृशि एवं घरेलू क्रियाओं की समस्त गतिविधियों सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में कम विकसित गाँवों के पुरूशों की भागीदारी, डण्क्ण् एवं भ्ण्क्ण् गाँवों के पुरूशों की भागीदारी की तुलना में अधिक ज्ञात हुई। केवल पषुपालन क्रियाओं से सम्बन्धित निर्णयों में पषुओं की खरीद एवं बिक्री ;54ण्55ःद्ध, दूध व दूध सम्बन्धी पदार्थों की बिक्री ;27ण्27ःद्ध एवं पषुओं की संख्या ;54ण्55ःद्ध के अन्तिम निर्णयों में कम विकसित गाँवों के पुरूशों का प्रभुत्व रहा। जबकि पषुओं के चारे से सम्बन्धित ;19ण्05ःद्ध तथा पषुओं के इलाज निर्णयों ;52ण्38ःद्ध में अधिक विकसित गाँवों के पुरूशों की भागीदारी, कम विकसित एवं मध्यम विकसित गाँवों के पुरूशों की भागीदारी की तुलना में अधिक पाई गई।

संक्षेप में कृशि, घरेलू एवं पषुपालन कार्यों के अन्तिम निर्णयों में कम विकसित गाँवों की महिलाओं एवं पुरूशों की भागीदारी, अन्य गाँवों से अधिक होने का सम्भावित कारण यह हो सकता है कि कम विकसित गाँवों में एकल परिवारों की संख्या अन्य गाँवों से अधिक होने के कारण एकल परिवारों में पति कोई भी निर्णय लेते समय पत्नी की राय पर विचार करता है। अतः दोनों ही अन्तिम निर्णयों म महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जबकि संयुक्त परिवारों में परिवार के अन्य सदस्यों की राय पर भी विचार किया जाता है। इसलिए अधिकतर निर्णय परिवार के मुखिया, पति व उनके भाईयों द्वारा लिए जाते हैं। अतः कम विकसित गाँवों में अधिकतर कार्यों सम्बन्धी अन्तिम निर्णयों में महिलाओं एवं पुरूशों का प्रभुत्व पाया गया।

विभिन्न गाँवों के तुलनात्मक विष्लेशण की तरह ही इन विभिन्न गाँवों में महिलाओं एवं पुरुशों की स्थिति की तुलना से स्पश्ट होता है कि कृशि एवं घरेलू दोनों ही प्रकार के कार्यों मे तीनों ही प्रकार के गांवों में (स्ण्क्ण्ए डण्क एवं भ्ण्क्ण्) लिए गये सभी कार्यों के अन्तिम निर्णयों में पुरुशों की भागीदारी, महिलाओं की अपेक्षा अधिक पाई गई। जब कि पषुपालन कार्यों में कम विकसित एवं मध्यम विकसित गाँवों में केवल पषुओं के चराने से सम्बन्धित व दूध व दूध सम्बन्धी पदार्थों की बिक्री के अन्तिम निर्णयों को छोड़कर षेश अन्य क्रियाओं में महिलाओं की तुलना में पुरुशों की षक्तिषाली भूमिका ज्ञात हुई। अधिक विकसित गाँवों की स्थिति में पषुपालन कार्यों सम्बन्धी सभी गतिविधियों के अन्तिम निर्णयों में महिलाओं की अपेक्षा पुरुशों की अधिक प्रतिषत संख्या भागीदारी निभाती है। अर्थात कृशि, घरेलू एव पषुपालन तीनों ही क्रियाओं के अन्तिम निर्णयों में पुरुशों की भूमिका निर्णायक व प्रमुख है।

lq>ko

महिलाओं की कृशि निर्णयों में भागीदारी बढ़ाने के लिए उनके तकनीकी ज्ञान और कौषल में वृद्धि की जानी चाहिए। इसके लिए कृशि विज्ञान केन्द्रों एवं दूसरे विस्तार कार्यक्रमों के माध्यम से व्यावसायिक प्रषिक्षण का आयोजन करना चाहिए। महिलाओं के सषक्तिकरण के लिए साक्षरता अभियान के माध्यम से महिलाओं में जागरूकता एवं आत्मविष्वास को बढ़ाया जा सकता है। ताकि वे समाज में अपनी सही पहचान को जान सकें और उन तत्वों पर ध्यान दे सकें जिनके कारण वे पिछड़ी हुई हैं। विकास में जनसहभागिता बढ़ाने के लिए ग्रामीण संस्थाओं के माध्यम से औरतों को संस्थाओं तक पहुँचने व सम्पर्क स्थापित करना चाहिए साथ ही इन्हें तकनीकी रूप से सषक्त करना चाहिए ताकि वे उचित निर्णय ले सकें। पुरुशों की तुलना में महिलाओं का निर्णय–प्रक्रिया में कम योगदान को बढ़ाने के लिए इन्हें व्यक्तिगत कौषल से सम्बन्धित प्रषिक्षण पाठ्यक्रम को विकसित व प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि ग्रामीण महिलाऐं सार्वजनिक मंच पर खुलकर चर्चा करने एवं निर्णय–प्रक्रिया में योगदान दे सकें।

REFERENCE

Devi, Laxmi (1988), Rural Women Management in Farm and Home, Northern Book Centre, New Delhi. | Kumar, Ranjana (1992), Women in Decision-Making, Vikas Publishing House Pvt. Ltd. Delhi. | Punia, R.K. (1991), Women in agriculture, Vol. 1: Their Status and Role, Northern Book Centre, New Delhi. | Sethi, Raj Mohini (1991), Women in Agriculture, Rawat Publications, Jaipur. | Unni, Jeemol (1992), Women's Participation in Indian Agriculture, Oxford & IBH Publishing Co.Pvt. Ltd. | Verma, Shashi Kanta (1992), Women in Agriculture: A Socio-Economic Analysis, Concept Publishing Company, New Delhi. | Alagumani (1999), "A Study in Decision Behaviour of Rural Women in Madurai Distt. Tamilnadu," Indian J. Agri. Econ. 54 (3): 300. | Azad, M.P., Parshadm, M., Yadav, R. and Bhatiya, S.S. (1985), "Extent of Participation of Women in Agriculture and Allied Enterprises", Indian Journal of Agricultural Economics, 40 (3): 275. | Bala, B. Moorti and Sharma, R.K. (1993), "Participation of Rural Women in Decision-Making", Indian Journal of Ext. Edu. 24 (3-4): 40-60. | Banerjee, B.B., Chakravarty, K. and Maiti, A.K. (2001), "Role of Women in Decision-Making Areas in Poultry Farming in District Nadia-West Bangal", Economic Affairs, Vol. 46, Qr. 2, June. | Bhaumik, Utpal, Sen, Mira and Chatterjee, J.G. (1996), "Participation of Rural Women in Decision Making", Indian Journal of Ext. Edu., Vol. 32, Nos. 1 to 4. | Charulata, S.K., Verma and Jain, Vinita (1993), "Decision Making Pattern in Farm Families", Indian Journal of Social Research, 34 (3), 205-208. | Dhillon, G. (1980), "Rural Women in Decision-Making Action", Kurukshetra 28 (9): 19-21. | Dubey, et al (1982), "Role of Rural Women in Decision-Making With Respect to Animal Husbandry", Indian Journal of Home Science, 14 (2), P.18-20. | Kishor, Raj, Gupta, Bhawana, Yadav, S.R. and Singh, T.R. (1999), "Role of Rural Women in Decision-Making Process in Agriculture in District Sitapur (Uttarpradesh)", Indian Journal of Agricultural Economics, Vol. 54, No. 3, July-Sept. | Montios, V.H. (1989), "Women in Agriculture", Indian Farming, Vol. 25 (3) :6. | Munjal, Shashi, Punia, R.K. and Sangwan, Veena (1985), "Women's Economic Contribution in Farm Households in Haryana", Indian Journal of Agricultural Economics, 40 (3) 274. | Saikia, Anuva (1999), "Role of Farm Women in Agriculture and Their Involvement in Decision-Making Process: A Study in Jorhat Distt. of Assam", Indian J. Agri. Econ.54 (3): 301-302. | Singh, A.K. and Gaira, P.S. (1999), "Female Work Participation and Involvement in Decision – Making Process: A Study in Uttrankhand", Indian J.Agri. Econ. 54(3) : 300-301. | Tiwari, P. (1999), "Involvement of Female in Decision-Making Process in Rural Sector of Parts of Thar Desert", Indian Journal of Adult Edu., Vol. 60, No. 2, pp. 48-52.